कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words)

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ☑

विषय संस्कृत

परीक्षा का दिन सोमवार

दिनांक 18-3-19

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है।164/2018

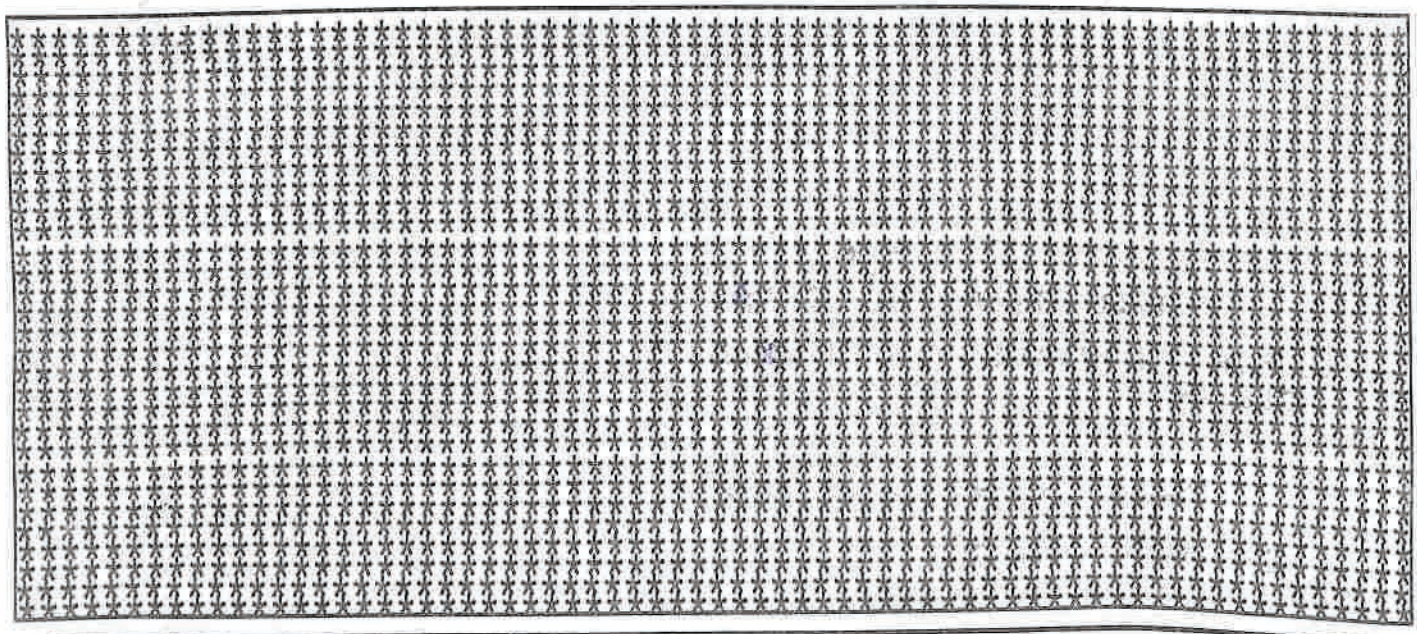

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

1 उत्तर - स्वामिनो जीवनं - - - - - - - - - - - - - चिकित्सा कारिता

प्रसंग :-

प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्पन्दना' के अष्टम पाठ 'कर्मयोगी स्वामी केशवानन्द' पाठ से अवतरित है।

इस गद्यांश में राजस्थान में जन्मे शिक्षा-सन्त स्वामी केशवानन्द की उपलब्धियों व महान कार्यों का वर्णन है।

हिन्दी - अनुवाद :-

स्वामी कुशलदास का जीवन सभी पन्थों में सद्भाव [अच्छी भावना] का उदाहरण है। निश्चित ही इन्होंने जाट-जाति में जन्म लिया परन्तु सिक्खों के गुरु नानकदेव के पुत्र श्री चन्द द्वारा प्रवर्तित [चलाया गया] उदासीसम्प्रदा में दीक्षित हुए। ये गुरुग्रन्थ के उत्तम पाठी भी हुए। ग्यारह वर्षों की साधना के द्वारा ही इन्होंने 700 पृष्ठों का सिक्ख इतिहास का लेखन किया।

विभाजन काल में [भारत-पाक विभाजन] हिंसा के व्यवहार से घायल मुस्लिम बन्धुओं की चिकित्सा भी स्वामी केशवानन्द ने करवायी। इस प्रकार स्वामी केशवानन्द ने अनेक कार्य किए

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

2.

उत्तर - परोक्षे _ _ _ _ _ _ _ _ _ पयोमुखम् ॥

प्रसंग :-

प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्पन्दना' के दशम पाठ सुभाषित-रत्नानि से अवतरित है।

इस श्लोक में सामने मधुर वचन बोलने वाले तथा पीछे से निंदा करने वाले विष के घड़े के समान कपटी मित्र को त्यागने के लिए प्रेरित किया गया है।

हिन्दी - अनुवाद :-

कवि कहता है कि जो मित्र सामने तो मधुर वचन बोलता है लेकिन पीछे से हमारी निंदा करता है या हमारा बुरा चाहता है, वह मित्र उस घड़े के समान है जिसके मुख भाग पर तो दूध या अमृत लगा हुआ है और अन्दर विष भरा हुआ है।
कवि ऐसे विष के घड़े के समान कपटी व दुष्ट मित्र को त्यागने की सलाह देता है। ऐसे मित्र से दूर रहना ही अच्छा बताया गया है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

3.

उत्तर- त्वमसि ..... रुचिराभरणा

प्रसङ्ग :-

प्रस्तुत श्लोकः अस्माकं स्पन्दना इति पाठ्यपुस्तकस्य 'जय सुरभारति!' इति पाठात् उद्धृतः अस्ति।

मूलतः अयं श्लोकः डॉ हरिरामाचार्येण विरचितात् 'मधुच्छन्दा' इति ग्रन्थात् सङ्कलितः अस्ति।

अस्मिन् श्लोके कविः 'सुरभारत्याः सद्गुणान् वर्णयति कथयति च यत् -

व्याख्या :-

हे देवि सुरभारति! त्वम् आश्रय-प्रदायिनी असि, त्रिलोके श्रेष्ठा असि, देवैः मुनिभिः च वन्दितौ चरणौ यस्याः सा।

शृङ्गारादिभिः नव-काव्य-रसैः माधुर्यमयी, कविता रूपेण अभिव्यञ्जिता असि, मृदुहासयुता असि, सुन्दर आभूषणैः च शोभिता असि। एवं त्वम् अति मनोहरा असि।

व्याकरणात्मक - बिन्दवः

1. त्रिभुवनधन्या = त्रिषु भुवनेषु धन्या [कर्मधारय समास]
2. रुचिराभरणा = रुचिराणि आभरणानि यस्याः सा [बहुव्रीहि समास]

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

3. त्वम् = युष्मद् शब्दः, प्रथमा विभक्तिः, एकवचनम् [सर्वनाम शब्द]

4

उत्तर - प्रतापः - अरे ! धिक् माम ...... भविष्यति । ....

प्रसङ्गः :-

नाट्यांशोऽयम् अस्माक स्पन्दना इति पाठ्यपुस्तकस्य 'स्वदेशं कथं रक्षेयम्' इति पाठात् उद्धृतः अस्ति ।
मूलतः अयं पाठः डॉ. नारायणशास्त्री - कांकरेण विरचितात् 'एकांकी संस्कृत नवरत्न सुषमा' इति एकांकीसंग्रहात् सङ्कलितः अस्ति ।
अस्मिन् नाट्यांशे महाराणा प्रतापसिंहस्य नैराश्यात् स्वदेशरक्षणे असमर्थस्य वेदना वर्णिता अस्ति । प्रतापः आर्थिकसंकटात् निराशम् भूत्वा स्वदेशं विहाय अन्यतः गन्तुम् उद्यतः अस्ति ।

व्याख्या :-

प्रतापः - अरे ! धिक् माम् प्रताप ! यदि अहं जन्मधरां रक्षितुं असमर्थः अस्मि तर्हि अत्र मेदपाटराज्ये निवासनेन किम्

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्रयोजनम् ? [दीर्घं निः श्वसिति]
[तदैव कोऽपि राजन्यः सामन्तः प्रवेशं करोति]

सर्वदारः[सामन्तः] — [नृपोचितं अभिवादनं कृत्वा]
विजयतु विजयतु महाराजः।

प्रतापः — [दीर्घं श्वासं आननं त्यजन् च उत्थाप्य]
हा धिक्कार अस्ति। बन्धो! किम् त्वमपि विजयतां विजयतां इति विजयद्घोषं विधाय माम् लज्जयितुम् इच्छासि ?

सर्वदारः [सामन्तः] — हे अस्माकं प्राणानाम् आश्रयभूतः! अपि एवं श्रीमान् प्रतापः कथयति ? आत्मनः धर्म-निर्वहनाय श्रीमता तु सर्वमपि कृतम्। स्वातन्त्र्याय असह्यानि कष्टानि अपि भवता सोढ़ानि। भवतां सर्वदा एव जयः संभविष्यति।

व्याकरणात्मक - बिन्दवः

1. रक्षितम् = रक्ष् + तुमुन्
2. स्वाधीनतार्थं = स्वाधीनता शब्दः, चतुर्थी विभक्ति एकवचन [स्त्रीलिंग शब्द]
3. प्रणम्य = प्र + नम् + ल्यप्
4. राजोचितं = राजा + उचितम् [गुण स्वर संधि

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

5.
उत्तर- (ii) कस्तूरी 'मृगात्' जायते।

(iv) पञ्चतन्त्रस्य रचना "पण्डित विष्णु शर्मणा" कृता।

(v) यानि 'अनवद्यानि कर्माणि' अस्माभिः तानि सेवितव्यानि।

(vi) सर्वे प्राणिनः 'प्रियवाक्य-प्रदानेन' तुष्यन्ति।

(vii) "संधेशक्तिः" इति पाठस्य कथा द्वितीयदेशस्य 'मित्रलाभात्' नामकात् परिच्छेदात् सम्पादिता विद्यते।

(viii) काव्येषु 'नाटकं' रम्यं उच्यते।

6.
उत्तर- ततस्तं कः भूत्वा दशति?

7
उत्तर- भवान् किम् वदति?

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

8
उत्तर - कस्य सदा विजयः एव भविष्यति ?

9.
उत्तर - मेघान् कुत्र अवलोकय नन्दामि ?

10
उत्तर - (1) पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम्।
मूढैः पाषाण-खण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते ॥

(2) धन-धान्य-प्रयोगेषु विद्यायाः संग्रहेषु च।
आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत् ॥

11
उत्तर - [क] अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं 'परोपकारस्य महत्त्वम्' अस्ति।

[ख] (i) सर्वे स्वार्थं समीहन्ते।

(ii) गावः अन्येभ्यः दुग्धं प्रयच्छन्ति।

(iii) नदीं स्वजलं न पिबति।

(iv) स्वार्थं विहाय अन्येभ्यः जीवनमेव वरं अस्ति वा वरं विद्यते।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(v) परेषाम् उपकारः परोपकारः उच्यते।

(ग) (i) "वृक्षाः फलानि प्रयच्छन्ति।" अत्र कर्तृपदं 'वृक्षाः' इति अस्ति।

(ii) "स्वार्थाय सर्वेऽपि जीवन्ति।" अत्र सर्वनामपदं 'सर्वे' इति अस्ति।

(iii) "मातृसमा उपकारिणी का विद्यते?" अत्र विशेषण पदं 'उपकारिणी' 'मातृसमा उपकारिणी' अस्ति।

(iv) "अतः स्वार्थं विहाय अन्येभ्यः जीवनमेव वरम्।" अत्र विशेष्यपदं 'अन्येभ्यः जीवनमेव' अस्ति।

12
उत्तर- (i) महा + ऋषिः [गुण स्वर सन्धिः]

(ii) शिवः + अहम् [उत्व विसर्ग सन्धिः]

13
उत्तर- (i) गायकः [अयादि स्वर सन्धि]

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		(ii) शिवश्च [श्चुत्व व्यंजन सन्धि]
	14 उत्तर	(i) विशालः भवनम् [कर्मधारय समासः]
		(ii) भरतश्च शत्रुघ्नश्च [द्वन्द्व समासः]
		(iii) ~~प्रतिदिनम्~~ [अव्ययीभाव समासः] प्रतिदिनम् [समास-विग्रह का समस्त पद
	15 उत्तर-	(i) विभक्तिः - द्वितीया कारणम् - 'विना' शब्दस्य योगे द्वितीया विभक्तिः भवति।
		(ii) विभक्तिः - चतुर्थी कारणम् - 'नमः' इति शब्दस्य योगे चतुर्थी विभक्तिः भवति।
		(iii) विभक्तिः - द्वितीया कारणम् - 'उपर्युपरि' इति शब्दस्य योग द्वितीया विभक्तिः भवति।
	16 उत्तर-	(i) श्रीधरः धनी आसीत्। [धन+इनि]

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(ii) शिक्षिका बालाः पाठं पाठयति ।
[शिक्षक + टाप्]

17
उत्तर - (i) बुद्धिमती = बुद्धि + मतुप्

(ii) पार्वती = पर्वत + ङीप्

18
उत्तर - (इतस्ततः, अद्यैव, वृथा, श्वः)

(i) अहं (i) श्वः देहली गमिष्यामि ।

(ii) तृणानि (ii) इतस्ततः विकीर्णानि आसन् ।

(iii) वयम् (iii) अद्यैव कार्यं सम्पादयामः

19
उत्तर - (i) वाच्य परिवर्तन -

जनेन ग्रामः गम्यते ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

20
उत्तर - भगिनी वस्त्रं प्रक्षालयति ।

21
उत्तर - अहम् नगरं गच्छामि ।

22
उत्तर - (i) महेशः रात्रौ सपादद्वशवादने शयनं करोति ।

(ii) "शताब्दी" रेलयानं पादोनदशवादने जयपुरात् देहलीं गच्छति ।

23
उत्तर - (i) कृषकः प्रातः क्षेत्रम् प्रतिगच्छति ।

(ii) हट्टे तिस्रः महिलाः वस्तूनि क्रीणान्ति

(iii) अहं रोटिकाम् खादामि ।

24
उत्तर -

सुनगरम्
18 मार्च 2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

प्रियमित्र! कवीन्द्र!

कुशली सन् कुशलं कामये। मा. शि. बोर्ड परीक्षा (i) सन्निकटे वर्तते। अहं समयसारिणीं (ii) निर्मिय योजनया अधीयानः अस्मि। अधुना मम (iii) परिजनाः अपि मम सहयोगे रताः सन्ति। गरवः सर्वोन्नमान् अङ्कान् (iv) प्राप्तुं विद्यालये (v) विशेषकक्षां सञ्चालयन्ति। ममापि लक्ष्यं तदेव वर्तते। अवमपि योजनया एव (vi) अधीयानः स्याद्। गतः (vii) कालः न पुनरायाति, इति सूक्तिं (viii) सर्वदा अपि स्मर।

भवन्मित्रम्
- नरेन्द्रः

25 संवाद - "वसतिस्वच्छता"

उत्तर - महेशः - निरञ्जन! (i) श्वः रविवासरः, तव का योजना वर्तते।

निरञ्जनः - अरे (ii) त्वं न जानासि? रविवासरे सर्वे मिलित्वा वसतेः स्वच्छता करणीयास्ति।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

महेशः — अहो! उत्तम विचारः। सर्वः श्वः (II) कदा गम्यते?

निरञ्जनः — प्रातः अष्टवादनाद् (IV) आरभ्य स्वच्छता कार्यमिदं भविष्यति।

महेशः — पूर्वं कस्य भागस्य (V) स्वच्छता करिष्यते?

निरञ्जनः — (VI) वामतः विद्यमानस्य अद्यस्य उद्यानस्य आदौ करिष्यामः।

महेशः — तेन तद् रमणीयं (VII) सुन्दरं च भविष्यति।

निरञ्जनः — (VIII) बालीनां स्वच्छता योजनायां स्वीकृता एव।

26.
उत्तर — (i) महिलाः कूपात् जलम् आनयन्ति।

(II) त्वम् अपि गच्छ।

(III) अहम् गणितं विज्ञानं च पठामि।

(V) मित्राय दुग्धं रोचते।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(vi) अहम् ज्ञानी आस्मि।

27 उत्तर – (i) पर्वतस्य (i) पृष्टतः ग्रामः अस्ति।

(ii) ग्रामे (ii) सुन्दराणि उपवनानि सान्ति।

(iii) मध्ये च भगवतः (iii) पशिवस्य देवालयोऽस्ति।

(iv) पर्वतं (iv) निकषा एका नदी प्रवहति।

(v) ग्राम जनाः नद्यां (v) तरन्ति

(vi) ग्रामस्य विद्यालयः अतीव (vi) मनोहरः आस्ति।

28 उत्तर – (i) एकदा एकः मकरः नद्यां वसति स्म।

(ii) नद्याः तटे फलोपेतः जम्बूवृक्षः आसीत।

(iii) तस्य शाखायां वानरः वसति स्म।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(iv) मकरः वानरेण पातितानि मधुरफलानि आस्वाद्य अचिन्तयत्।

(v) "फलानि अतिमधुराणि।" अतः वानरः हृदयन्तु अतीव मधुरं स्यात् अतः वानरः हृदयं खादामि।

(vi) वानरः मकरस्य प्रयासं बुद्धिं चातुर्येण विफलीकृतवान्।

समाप्तम्